Downloaded from www.studiestoday.com

खण्ड ग

काव्यांश पर आधारित अर्थ–ग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

पद

कबीरदास

हम तौ एक एक करि जांनां।
दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग जिन नाहिंन पहिचांनां ।।
एकै पवन एक ही पानीं एकै जोति समांनां।
एकै खाक गढ़े सब भांड़ै एकै कोंहरा सांनां।।
जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई।
सब घटि अंतरि तूँही व्यापक धरै सरूपै सोई।।
माया देखि के जगत लुभांनां काहे रे नर गरबांनां।
निरभै भया कछू नहिं ब्यापै कहै कबीर दिवांनां।।

प्रश्न 1. कबीर परमात्मा के किस स्वरूप में आस्था रखते हैं? और वह स्वरूप किस प्रकार का है?

उत्तरः– कबीर परमात्मा के अद्वैत स्वरूप में आस्था रखते थे और वह स्वरूप निर्गुण निराकार ईश्वर का है।

प्रश्न 2. कबीर ने किन लोगों को नरक का अधिकारी माना है?

उत्तरः– कबीर ने उन लोगों को नरक का अधिकारी माना है जो लोग परमात्मा को एक नहीं, दो मानते हैं।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न 3. कबीर ने किस प्रकार सिद्ध किया है कि ईश्वर एक है?

उत्तरः– कबीर ने कहा कि जिस प्रकार विश्व में एक ही वायु और जल है उसी प्रकार संपूर्ण संसार में एक ही परम ज्योति व्याप्त है। सभी मानव एक ही मिटटी से ब्रम्हा द्वारा निर्मित हैं।

प्रश्न 4. कबीर के अनुसार प्रभु को जानने के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तरः– कबीर के अनुसार प्रभु को जानने के लिए मिथ्या दंभ, माया–मोह अर्थात सुखों को त्यागना आवश्यक है।

पद

मीरा

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई
जा के सिर मोर–मुकुट, मेरो पति सोई
छांड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई?
संतन ढिग बैठि–बैठि, लोक–लाज खोयी
अंसुवन जल सींचि–सींचि, प्रेम–बेलि बोयी
अब त बेलि फैलि गयी, आणंद–फल होयी
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी
भगत देखि राजी हुयी, जगत देखि रोयी
दासि मीरां लाल गिरधर! तारो अब मोही

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न 1. मीरा अपना सर्वस्व किसे मानती हैं? और वह स्वरूप कैसा है।

उत्तरः– मीरा श्रीकृश्ण को अपना सर्वस्व मानती हैं, जिनके सिर पर मोर–मुकुट सुशोभित है।

प्रश्न 2. मीरा ने समाज को क्या चुनौती दी है?

उत्तरः– मीरा ने समाज को चुनौती दी है कि उसने तो साधु–संन्यासियों के साथ बैठ–बैठकर सामाजिक और पारिवारिक मान–मर्यादा का परित्याग कर दिया है।

प्रश्न 3. मीरा किसे देखकर प्रसन्न हो उठती हैं तथा किसे देखकर रो पड़ती हैं?

उत्तरः– मीरा प्रभु–भक्त को देखकर प्रसन्न हो उठती हैं तथा संसार को देखकर रो पड़ती हैं।

प्रश्न 4. मीरा कृश्ण से क्या प्रार्थना करती हैं और क्यों?

उत्तरः– मीरा कृश्ण से अपना उद्धार करने की प्रार्थना करती हैं ताकि उन्हें मुक्ति मिल सके।

पथिक

कवि– रामनरेश त्रिपाठी

निकल रहा है जलनिधि–तल पर दिनकर–बिंब अधूरा।
कमला के कंचन–मंदिर का मानो कांत कँगूरा।
लाने को निज पुण्य–भूमि पर लक्ष्मी की असवारी।
रत्नाकर ने निर्मित कर दी स्वर्ण–सड़क अति प्यारी।।
निर्भय, दृढ़, गंभीर भाव से गरज रहा सागर है।
लहरों पर लहरों का आना सुंदर, अति सुंदर है।
कहो यहाँ से बढ़कर सुख क्या पा सकता है प्राणी?
अनुभव करो हृदय से, हे अनुराग–भरी कल्याणी।।

प्रश्न 1. सागर के तट पर खड़ा कवि क्या देखता है?

उत्तरः– सागर के किनारे खड़ा कवि सूर्य का उदित होना देखता है।

प्रश्न 2. सूर्य के उदित रूप को देखकर कवि क्या कहता है?

उत्तरः– सूर्य के उदित रूप को देखकर कवि कहता है कि जब समुद्र के जल की सतह से सूर्य का अधूरा–सा प्रतिबिंब उभरता है तो ऐसा जान पड़ता है मानों लक्ष्मी के स्वर्ण मंदिर का कँगूरा हो।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न 3. लक्ष्मी के स्वागत के लिए सागर ने क्या किया है?

उत्तरः– लक्ष्मी के स्वागत के लिए समुद्र ने सोने जैसी सड़क बिछा दी है।

प्रश्न 4. कवि प्रकृति के नूतन रूप को दिखाकर क्या प्रगट करना चाहता है?

उत्तरः– कवि प्रकृति के प्रतिक्षण बदलते नूतन रूप को दिखाकर बताना चाहता है कि प्रकृति के अद्भुत सौंदर्य से बढ़कर कोई दूसरा सुख नहीं है।

वे आँखें

सुमित्रानंदन पंत

लहराते वे खेत दृगों में
हुआ बेदखल वह अब जिनसे,
हँसती थी उसके जीवन की
हरियाली जिनके तृन–तृन से!
आँखों ही में घूमा करता
वह उसकी आँखों का तारा,
कारकुनों की लाठी से जो
गया जवानी ही में मारा!

प्रश्न 1. किसानों को किससे बेदखल कर दिया गया?

उत्तरः– किसानों को उनके अपने खेतों से जमींदारों ने बेदखल कर दिया।

प्रश्न 2. किसान किसे देखकर फूला न समाता था?

उत्तरः– किसान अपनी हरी–भरी लहलहाती खेती को देखकर फूला न समाता था।

प्रश्न 3. जमींदार के कारिंदों ने भरी जवानी में किसे पीट–पीटकर मार डाला था?

उत्तरः– जमींदार के कारिंदों ने भरी जवानी में किसान के बेटे को पीट–पीटकर मार डाला था।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न 4. कविता में किसान किसके भोशण की मार झेल रहे हैं?

उत्तरः– कविता में किसान जमींदारों के भोशण की मार झेल रहे हैं।

घर की याद

भवानी प्रसाद मिश्र

हे सजीले हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें,
पाँचवें को वे न तरसें,
मैं मजे में हूँ सही है,
घर नहीं हूँ बस यही है,
किन्तु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है,

प्रश्न 1. कवि किसे और क्यों अपना संदेशवाहक बना रहा है?

उत्तरः– कवि सावन को अपना संदेशवाहक बना रहा है क्योंकि वह अपने घर और परिवार जनों से दूर जेल में है ताकि वह उन्हें संदेश और सांत्वना दे सके।

प्रश्न 2. कवि सावन को संदेशवाहक बनाकर किसके पास क्या संदेश देने के लिए भेज रहा है?

उत्तरः– कवि सावन को संदेशवाहक बनाकर अपना संदेश पिताजी के पास भेज रहा है कि वह जेल में आनंद पूर्वक है। उसे यहाँ कोई दुख नहीं है।

प्रश्न 3. जेल में कवि को वास्तव में क्या दुख है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तरः—जेल में कवि को वास्तव में यही दुख है कि वह अपने परिवार जनों से दूर जेल में है ; उसे घर और परिवार जनों का अभाव ही सबसे बड़ा अभाव है।

प्रश्न 4. कवि ने सावन को किस प्रकार संबोधित किया है?

उत्तरः— कवि ने सावन के महीने को पुण्यात्मा और दूसरे का उपकार करने वाले के रूप में संबोधित किया है।

चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती

त्रिलोचन

चंपा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे गांधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
मैंने कहा कि चंपा, पढ़ लेना अच्छा है
ब्याह तुम्हारा होगा, तुम गौने जाओगी,
कुछ दिन बालम संग साथ रह चला जाएगा जब कलकत्ता
बड़ी दूर है वह कलकत्ता
कैसे उसे सँदेशा दोगी
कैसे उसके पत्र पढ़ोगी
चंपा पढ़ लेना अच्छा है !

प्रश्न 1. कवि चंपा को क्या समझाता है?

उत्तरः— कवि चंपा को समझाता है कि उसे पढ़ाई लिखाई की आवश्यकता तब पड़ेगी जब वह विवाहोपरांत पति को संदेश भेजना चाहेगी।

प्रश्न 2. चंपा कवि से गांधी जी के बारे में क्या कहती है और क्यों ?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तरः– चंपा कवि से कहती है कि गांधी जी अच्छे हैं फिर वे पढ़ने–लिखने की बात क्यों करते हैं, क्योंकि पढ़–लिख लेने से लोगों को जीविकोपार्जन के लिए अपना घर छोड़ना पड़ता है।

प्रश्न 3. चंपा के मन में कौन–सा भाव छिपा हुआ है?

उत्तरः– चंपा के मन में यह भाव छिपा है कि पढ़–लिखकर लोग धन कमाने के लिए दूर चले जाते हैं जिसके परिणाम स्वरूप घर टूट जाते हैं।

प्रश्न 4. कवि ने काव्यांश में चंपा को किस हकीकत से परिचित कराया है?

उत्तरः– कवि ने चंपा को बताया कि पढ़–लिखकर लोग धन कमाने के लिए घर से दूर चले जाते हैं जिसके कारण परिवार टूटते हैं।

साये में धूप(गज़ल)

दुश्यंत कुमार

कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।
यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।

प्रश्न 1. आज़ादी प्राप्त कर लेने के बाद क्या तय हुआ था?

उत्तरः– आज़ादी प्राप्त कर लेने के बाद यह तय हुआ था कि प्रत्येक घर को रोशनी देने के लिए सुख–सुविधा रूपी चिराग निश्चित रूप से प्रदान किए जाएँगे।

प्रश्न 2. कवि आज की कौन–सी स्थिति बताना चाहता है?

उत्तरः– कवि कहना चाहता है कि आज तो स्थिति यह बन गई है कि घर तो क्या, पूरे भाहर को रोशनी देने के लिए एक भी दीपक नहीं है।

प्रश्न 3. कवि के अनुसार वृक्षों को किस लिए लगाया जाता है?

उत्तरः– कवि के अनुसार वृक्षों को इसलिए लगाया जाता है ताकि हमें धूप न लग सके, किन्तु दुर्भाग्यवश आज़ादी प्राप्ति के पश्चात भी सुख–सुकून प्राप्त नहीं हो पा रहा है।

प्रश्न 4. कवि ने किस पर कटाक्ष किया है और क्यों?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तरः– कवि ने भासन व्यवस्था से जुड़े हुए लोगों पर कटाक्ष किया है, क्योंकि देशवासियों की सुख–सुविधा का दायित्व भासक वर्ग का होता है।

वचन

अक्क महादेवी

हे भूख! मत मचल
प्यास, तड़प मत
हे नींद ! मत सता
क्रोध, मचा मत उथल–पुथल
हे मोह ! पाश अपने ढील
लोभ, मत ललचा
हे मद! मत कर मदहोश
ईर्ष्या, जला मत
ओ चराचर! मत चूक अवसर
आई हूँ संदेश लेकर चन्न मल्लिकार्जुन का

प्रश्न 1. अक्क महादेवी ने कौन सा संदेश दिया है?

उत्तरः– अक्क महादेवी ने इंद्रियों पर नियंत्रण रखने का संदेश दिया है।

प्रश्न 2. लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ किस प्रकार बाधक होती हैं?

उत्तरः– इंद्रियाँ सांसारिक विशय विकारों से किसी ने किसी रूप में जुड़ी हुई होती है, जिसके कारण ईश्वर भक्ति में बाधा उत्पन्न होती है।

प्रश्न 3. ''ओ चराचर! मत चूक अवसर'' पंक्ति में निहित कवि के भाव को स्पश्ट कीजिए।

उत्तरः– भारतीय दर्शन के अनुसार मानव–जन्म बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है। भक्ति द्वारा जन्म–मरण के चक्र से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए इस अवसर का लाभ उठाने के लिए कहतीं हैं।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न 4. ईर्श्या से ग्रस्त मानव क्या–क्या करता है?

उत्तरः– ईर्श्या से ग्रस्त मानव दूसरों की प्रगति देखकर जलता है, बल्कि वह तो स्वयं अपने आप को भी जलाता है।

सबसे खतरनाक

पाश

सबसे खतरनाक वह चाँद होता है
जो हर हत्याकांड के बाद
वीरान हुए आँगनों में चढ़ता है
पर आपकी आँखों को मिर्चों की तरह नहीं गड़ता है
सबसे खतरनाक वह गीत होता है
आपके कानों तक पहुँचने के लिए
जो मरसिए पढ़ता है
आतंकित लोगों के दरवाजों पर
जो गुंडे की तरह अकड़ता है

प्रश्न 1. कवि ने किस जीवन को सबसे खतरनाक माना है?

उत्तरः– कवि ने समाज में फैले अन्याय और आतंक का विरोध न करने वाले जीवन को सबसे खतरनाक माना है।

प्रश्न 2. घर आंगन किन हत्याकांडों के कारण सुनसान हो जाते हैं?

उत्तरः– चारों ओर फैले आतंक के वातावरण में जब हत्याकांड की घटनाएँ होती हैं तब घर आंगन सुनसान हो जाते हैं।

प्रश्न 3. ''पर आपकी आँखों को मिर्चों की तरह नहीं गड़ता'' पंक्ति का आशय स्पश्ट कीजिए।

उत्तरः– वर्तमान समय में जब आतंकी गतिविधियों के कारण लाखों लोग हत्याकांडों की बलि चढ़ जाते हैं तो अन्य लोग उनके गम में सामिल होने की बजाय अपनी खुशियों में मग्न रहते हैं।

प्रश्न 4. कवि की दृश्टि में सबसे खतरनाक स्थितियाँ कौन सी हैं?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तरः– कवि की दृश्टि में लोगों का सपनों को मार देना, लय से भटक जाना तथा सब कुछ चुपचाप सहन करना ही खतरनाक स्थितियाँ हैं।

आओ, मिलकर बचाएँ

निर्मला पुतुल

और इस अविश्वास–भरे दौर में
थोड़ा–सा विश्वास
थोड़ी–सी उम्मीद
थोड़े–से सपने
आओ, मिलकर बचाएँ
कि इस दौर में भी बचाने को
बहुत कुछ बचा है,
अब भी हमारे पास !

प्रश्न 1. कवयित्री किसे और कैसे बचाने की बात कहती है?

उत्तरः– कवयित्री सामाजिक–सांस्कृतिक और प्राकृतिक परिवेश को व्यक्ति के प्रयासों के द्वारा बचाना चाहती हैं।

प्रश्न 2. कवयित्री थोड़ी सी आशा देकर किसे जीवित करने की बात कर रही हैं?

उत्तरः– कवयित्री धूमिल पड़ती आदिवासी समाज की आशा की किरण को फिर से थोड़ी सी आशा देकर जीवित करने की बात कर रही हैं।

प्रश्न 3. प्रकृति के विनाश के कारण कौन विस्थापन के कगार पर पहुँच चुका है?

उत्तरः– प्रकृति के विनाश के कारण आदिवासी जातियाँ विस्थापन के कगार तक पहुँच चुकी हैं।

प्रश्न 4. आज के युग के बारे में कवयित्री कौन से विचार रखती हैं?

उत्तरः– कवयित्री का मानना है कि आज का युग ऐसा बन गया है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति दूसरे पर अविश्वास करने लगा है। हर कोई संदेह के घेरे में दिखने लगा है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

काव्यांश पर आधारित सौंदर्यबोध संबंधी प्रश्नोत्तर

जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई।
सब घटि अंतरि तूँही व्यापक धरै सरूपै सोई।।

उत्तरः– भाव–सौंदर्य–

जिस प्रकार बढ़ई लकड़ी को काटता है परन्तु उसमें निहित अग्नि जो निराकार है, को नहीं काट सकता; ठीक उसी प्रकार भारीर नश्वर है, परन्तु आत्मा अमर है।

शिल्प–सौंदर्य–

- 'उदाहरण अलंकार' द्वारा ईश्वर को निराकार और घट–घट वासी बताया गया है। (उदाहरण के द्वारा बात को स्पश्ट किया गया है)
- काश्ट, अग्नि, अन्तरि आदि तत्सम भाब्द हैं।
- भाशा सधुक्कड़ी है।
- पद तुकांत है।

अंसुवन जल सींचि–सींचि, प्रेम–बेलि बोयी
अब त बेलि फैलि गयी, आणंद–फल होयी

उत्तरः– भाव–सौंदर्य–

इन पंक्तियों में मीरा का श्रीकृश्ण के प्रति अनन्य प्रेम, दृढ़ता, सात्विकता और तरलता की अभिव्यक्ति हुई है। मीरा ने आँसुओं के जल से सींच–सींच कर प्रेमरूपी बेल को पल्लवित किया है। अब वह बेल चारों तरफ फैल गई है और आनंदरूपी फल के कारण उन्हें आनंद प्राप्त होने लगाा है।

शिल्प–सौंदर्य–

- अँसुवन जल, प्रेमबेलि और आनंद–फल में रूपक अलंकार है।
- सींचि–सींचि में पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार है।
- भाशा राजस्थानी है।
- पद तुकांत है

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

- मुक्तक भौली का प्रयोग है।

अंधकार की गुहा सरीखी
उन आँखों से डरता है मन,
भरा दूर तक उनमें दारुण
दैन्य दुख का नीरव रोदन!

उत्तरः– भाव–सौंदर्य–

कवि ने किसान की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण किया है। जिसकी आँखों में दूर–दूर तक अंधकार रूपी निराशा भरी हुई है। जिसके कारण उसकी आँखें रोती हुई भी चुप हैं।

शिल्प–सौंदर्य–

- अंधकार की गुहा सरीखी में उपमा अलंकार है।
- दारूण दैन्य दुख में अनुप्रास अलंकार है।
- भाशा सरल सुबोध भाब्दों से युक्त खड़ी बोली है।
- स्वच्छंद कविता में लय और तुक नहीं है।

जिएँ तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले,
मरें तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए।

उत्तरः– भाव–सौंदर्य–

कवि हमें अपने स्वाभिमान के साथ घर में और घर के बाहर दोनों स्थानों पर जीने की प्रेरणा प्रदान करता है।

शिल्प–सौंदर्य–

- गुलमोहर भाब्द में यमक अलंकार है।
- उर्दू मिश्रित खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग हुआ है।
- गुलमोहर स्वाभिमान का प्रतीक है।
- भोर के अंतिम पद में तुक का प्रयोग हुआ है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

सबसे खतरनाक वह आँख होती है
जो सब कुछ देखती हुई भी जमी बर्फ होती है
जिसकी नजर दुनिया को मुहब्बत से चूमना भूल जाती है
जो चीजों से उठती अंधेपन की भाप पर ढुलक जाती है
जो रोजमर्रा के क्रम को पीती हुई
एक लक्ष्यहीन दुहराव के उलटफेर में खो जाती है

उत्तरः– भाव–सौंदर्य–

कविता में कवि ने उस स्थिति को खतरनाक कहा है जब आँखों द्वारा सब कुछ देखने के बावजूद कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता है।

शिल्प–सौंदर्य–

- काव्यांश में लाक्षणिकता है।
- कविता में नए सौंदर्य विधान द्वारा तीखे तेवर दृश्टिगत होते हैं।
- कवि जड़ स्थितियों में बदलाव चाहता है।
- जमी बर्फ, अंधेपन की भाप, रोजमर्रा के क्रम को पीना आदि लाक्षणिक प्रयोग हैं।
- छन्द मुक्त कविता में लय और तुक का अभाव है।

कविता की विशय–वस्तु पर आधारित लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. कबीर के अनुसार मानव भारीर का निर्माण किन पाँच तत्वों से हुआ है?

उत्तरः– मानव भारीर का निर्माण अग्नि, आकाश, जल, वायु और पृथ्वी नामक पाँच तत्वों से हुआ है। मृत्यु के पश्चात् मानव भारीर मिट्टी में विलीन हो जाता है।

प्रश्न 2. 'सहजै सहज समाना' पंक्ति में निहित कबीर के उद्देश्य को स्पश्ट कीजिए।

उत्तरः– कबीर के अनुसार ईश्वर सहज रूप में कण–कण में व्याप्त है, जिसको बिना किसी बाह्याडंबरों के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

प्रश्न 3. कबीर ने किन–किन पाखंडों का उल्लेख किया है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तरः– कबीर ने मूर्ति पूजने, माला पहनने, छापा–तिलक धारण करने, कब्र–पूजने, साखी सबद गाने, धार्मिक ग्रंथों का पाठ करने, तीर्थ यात्रा करने आदि पाखंडों का उल्लेख किया है।

प्रश्न 4. लोग मीरा को बावरी क्यों कहते हैं?

उत्तरः– लोग मीरा को बावरी इसलिए कहते हैं क्योंकि वे श्रीकृश्ण के प्रेम में इतनी अनुरक्त हो गई थीं कि श्रीकृश्ण को ही अपना पति मान लिया था। वे साधु–संतों के बीच में बैठकर नाचती थीं और प्रचलित सामाजिक परंपराओं एवं मर्यादाओं का उल्लंघन करती थीं।

प्रश्न 5. मीरा जगत को देखकर रोती क्यों हैं?

उत्तरः– मीरा जगत को देखकर रोती हैं क्योंकि लोग मोह–माया के चक्कर में फँसकर व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त हैं। सांसारिक कार्यों में व्यस्त होने के कारण उनका उद्धार संभव नहीं है। यही देखकर मीरा ने दुख प्रगट किया है।

प्रश्न 6. आत्म–प्रलय का क्या अर्थ है? पथिक पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तरः– आत्म–प्रलय का अर्थ है–स्वयं को भूल जाना। सागर तट पर खड़ा पथिक प्रकृति में प्रतिक्षण होने वाले परिवर्तनों के कारण भाव–विह्वल हो जाता है। जिसके कारण उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है।

प्रश्न 7. पथिक किस पर बैठकर आकाश में विचरण करना चाहता है और क्यों?

उत्तरः– पथिक बादलों पर बैठकर समुद्र और आकाश के बीच में विचरण करना चाहता है क्योंकि वह नीले आकाश और नीले समुद्र के प्राकृतिक सौंदर्य को देखना चाहता है। उसे समुद्र और आकाश का प्राकृतिक सौंदर्य अपनी ओर आकर्शित करता है।

प्रश्न 8. 'वे आँखें' कविता में कवि के प्रतिपाद्य को स्पश्ट कीजिए।

उत्तरः– इस कविता में कवि ने युग–युग से भोशित किसान की स्वाधीनता के बाद के जीवन की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण किया है। विकास की तमाम घोशणाओं के बावजूद उसके व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में कोई परिवर्तन देखने को नहीं मिलता। जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय किसान भुखमरी के कारण आत्महत्या करने के लिए विवश दिखाई पड़ रहा है।

प्रश्न 9. ''यह तुम्हारी लीक ही है'' से कवि का क्या आशय है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तरः– इसके द्वारा कवि यह कहना चाहता है कि इस परिवार की परंपरा देश के प्रति कर्तव्य निभाने की है। भवानी ने देश के लिए जेल जाकर इसी पुरानी परंपरा का निर्वाह किया है।

प्रश्न 10. ''चंपा काले–काले अच्छर नहीं चीन्हती'' में कवि ने क्या संदेश दिया है?

उत्तरः– काले–काले विशेशण काव्यांश में अक्षरों के लिए प्रयोग में आया है। जो एक तरफ शिक्षा–व्यस्था के अन्तर्विरोधों को उजागर करता है तो दूसरी ओर उस दारुण यथार्थ से हमारा परिचय कराता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में नारी–शिक्षा की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। जिसके कारण ग्रामीण स्त्रियाँ प्रायः अनपढ़ होती हैं।

प्रश्न 11. चंपा ने ऐसा क्यों कहा कि कलकत्ता पर बजर गिरे?

उत्तरः– चंपा यद्यपि पढ़ी लिखी नहीं है फिर भी उसके मन में भविश्य के प्रति आशंका उत्पन्न हो जाती है। आर्थिक तंगी के कारण ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर काम धंधे की तलाश में बड़ी मात्रा में लोगों का पलायन होता है और वहाँ वे भोशक व्यवस्था के शिकार बनते हैं। कवि द्वारा यह कहना कि उसका पति थोड़े समय तक साथ रहेगा और फिर कलकत्ता चला जाएगा। इसके कारण वह घर टूटने की आशंका से भयभीत हो जाती हैं और कलकत्ता पर वज्र गिरने की कामना करती है ताकि न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी।

प्रश्न 12. ''दरख्तों के साये में धूप लगती है'' से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तरः– इसके द्वारा कवि यह कहना चाहता है कि जिन उच्च पदस्थ व्यक्तियों और संस्थाओं से जनता को समस्याओं के समाधान होने की आशा थी वही अन्याय और अत्याचार का पर्याय बन गए हैं।

प्रश्न 13. कवयित्री ईश्वर को जूही के फूल के समान क्यों कह रही हैं?

उत्तरः– जूही के फूल बहुत छोटे, सुकुमार और मधुर सुगंध वाले होते हैं। इसी प्रकार ईश्वर भी अत्यंत सूक्ष्म, कोमल और मधुर गुण वाले होते हैं। जूही के फूल की तरह ईश्वर की सुगंध भी चहुँ ओर फैली है।

प्रश्न 14. मुट्ठियाँ भींचकर बस वक्त लिकालना, बुरा क्यों है?

उत्तरः– मुट्ठियाँ भींचकर रह जाना का अर्थ होता है– क्रोधवश कसमसाकर रह जाना। व्यक्ति को अन्याय, अत्याचार को देखकर क्रोध आता है। वह उसके विरुद्ध संघर्श करना चाहता है

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

किन्तु भय विवशता अथवा अकेला होने की वजह से कुछ नहीं कर पाता है। वह केवल कसमसाकर रह जाता है। समाज और व्यक्ति के लिए यह स्थिति बुरी है।

प्रश्न 15. भाशा में 'झारखंडीपन' से क्या अभिप्राय है?

उत्तरः– संथाली आदिवासियों की मातृभाशा संथाली है। वे दैनिक व्यवहार में जिस संथाली भाशा का प्रयोग करते हैं, उसमें उनके राज्य झारखंड की पहचान झलकती है। उनकी भाशा से यह पता लग जाता है कि वे झारखंड राज्य के निवासी हैं।

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com